ISSN:2583-8849

डॉ. छाया शर्मा

अजमेर, राजस्थान

अब हथियार उठाना होगा

अब हथियार उठाना होगा,
कहीं न होगा हिंसा-प्रहार।
सत्य-विवेक, करुणा-साहस,
यही करेंगे नव-उद्गार।।

झूठ अगर सिंहासन बैठे,
सत्य न होगा आज अधीर।
अन्यायों की काली निशि में,
दीपक बन जलता रणवीर।।

लोभ-मोह की जंजीरें अब,
तोड़ चले जन-शक्ति अपार।
नीति-न्याय की राह पकड़कर,
बदल चलो बिगड़ा संसार।।

धर्म, दया, साहस, श्रम, सेवा, यही मनुज का है श्रृंगार। इनसे ही जीवन महके है, इनसे भरता सुख-भंडार।।

परास्त भय को करते जाना,
हिम्मत की उठती हुंकार।
अंतर्मन का ज्ञान भेदकर
नव विचार का हो गुंजार।।

शब्द बने अब शस्त्र बुद्धि के,
कलम बने रण में तलवार।
जन-जन में अधिकार जगा कर,
आए नव-उत्थान-प्रचार।।

अब हथियार उठाना होगा,
सत्य-अहिंसा का आधार।
मानवता का दीप जलाकर,
जग जीवन लेताआकार।।

स्वार्थों के ऊँचे दुर्गों पर,
करना होगा सत्य प्रहार।
झुक न सके जो धर्म-पताका,
ऐसा हो जन-जन का द्वार।।

अनाचार की काली नागिन,
फैल रहा विष का विस्तार।
जन-जागृति की अग्नि जलाकर,
करना होगा अब संहार।।

जाति-धर्म की छोटी बातें,
मत बाँटो मानव परिवार।
प्रेम और सद्भावों से तुम,
दूर करो सारे व्यभिचार।।

सीमा पर जो वीर डटे हैं,
उन पर हमको है अभिमान।
घर-घर से संकल्प उठे अब,
सर्वोपरि राष्ट्र महान।।
नारी का सम्मान सुरक्षित,
सभ्यता का रहे श्रृंगार।
जिस घर में उसका आदर हो,
बस जाता सुख का संसार।।

भूखे मुख की पीर समझ लो,
यही धर्म का प्रथम विचार।
रोटी शिक्षा स्वास्थ्य सभी का,
जीवों का जीवन अधिकार ।।

युवा शक्ति! अब जागो जागो,
भर लो नव उत्साह अपार।
भारत माँ की शान बढ़ाओ,
ज्ञान बने सबका हथियार।।

वृक्ष लगाकर, नीर बचाकर,
कर लो कुदरत का सत्कार।
हरित धरा का मान बचाओ,
यही भविष्य का है आधार।।